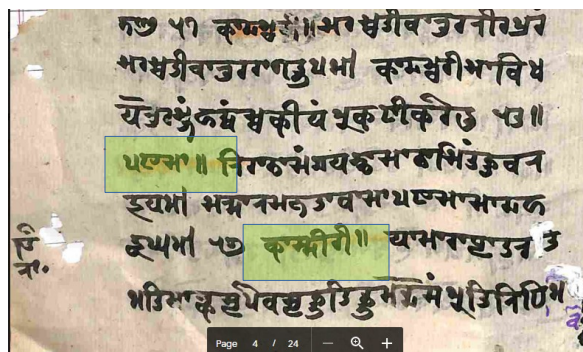


**Pages 1- 12 :Shri Bhavani Sahasra Namavali Tika**

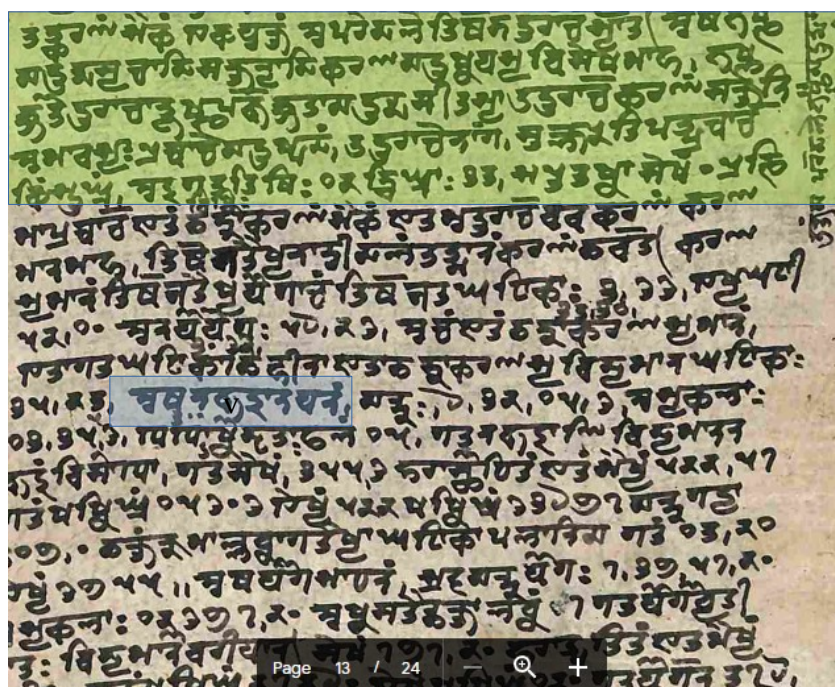


रक्तदंतोर्ध्वकेशी च बन्धूकहुसुमारुणा ॥८७॥  
कादंबरीपटासा च काश्मीरीकुङ्कुमप्रिया च्छांति  
बहुसुवर्णच मतिर्बहुसुवर्णदा ॥८८॥ मातंगिनीवरा  
रोहा मत्तमातंगगामिनी । हंसाहंसगति हंसी हंसो

Ref: <https://archive.org/details/bhavani-sahasranam-stotra-panchastavi-tatha-artiyon-sahit-jammu-dharmik-pustak-bhandar/page/n15/mode/2up>

**Pages 13- 24 : Graha Laghava**

गु-ला-  
०१



अथ करणानयनम् । सा गतातिथिद्विघ्नी द्विगुणा । अर्द्धभिः ७ सप्तभिस्तष्टा शेषांकतुल्यं विद्यमानतिथेः पूर्वार्धे बवकरणादारभ्य गणनायां विद्यमानकरणं भवेत् । तत्करणं सैकमेक्युक्तामपरे दले तिथेरुत्तरार्धे स्यात् । अथ करणचतुष्टयस्य विशेष-  
माह । कृष्णभूतोत्तरार्धात् कृष्णपक्षे भूतं चतुर्दशी । तस्या उत्तरार्धे शकुनिः करणम् । अमावास्यापूर्वार्धे चतुष्पादम् । उत्तरार्धे नागम् । प्रतिपत्पूर्वार्धे किंस्तुघ्नम् । अत्र गततिथिः १४ । द्विघ्नी २८ सप्त-७ तष्टा शेषं पौर्णिमास्यां पूर्वार्धे जातं भद्राकरणम् । सैकं जातमुत्तरार्धे बवकरणम् । करणस्य मानं तिथेर्गतैष्ययोगाधम् । तिथेर्गतघटिकाः २।३३ । एष्यघटिकाः ५४।१० । अनयोयोगः ५६।४३ । अर्धं जातं भद्राकरणस्य मानं घटिकाद्यम् २८।२१ एता गतघटिकाभी रहिता जाता भद्राकरणस्य विद्यमानघटिकाः २५ पलानि ४८ ॥

अथः नक्षत्रानयनम् । चन्द्रः ६।२४।१५ । ३ अस्य कलाः १२३५५ । ३

Ref

[https://archive.org/details/grahalaghavaganesadaivajnasanskritbhashyamallariviswanathahindied.kedardattajoshi/mlbd\\_626\\_p/page/n157/mode/2up](https://archive.org/details/grahalaghavaganesadaivajnasanskritbhashyamallariviswanathahindied.kedardattajoshi/mlbd_626_p/page/n157/mode/2up)



लेखक मवडा रिपुगठरवी कनर  
 भद्रकण्ड ॥ उमेउलभयीकृष्णमकलं  
 वामयवुपि चडतीमसुयंकडुभद्र  
 कण्डकयडुमे ॥ २१ रेखी ॥ भवभुभव  
 शुभभलषवभचरमचभिउमममपि  
 कषत्रगीडापरमसुगीयंरेखीडिनभु  
 परमभुठव ॥ २२ भद्रकण्डप्रसिद्ध ॥  
 भद्रमंगभमकीवभद्रनीलमिल  
 मगिः भद्रमगिभुद्रुयचक्रकठरव  
 प्रसिद्ध ॥ २३ निम्न ॥ चडतीयंवीष  
 भद्रभुद्रुमे कगिरेकेचगिकगिसु  
 कगिमिष्टभद्रमेवसुभतेनि

उपमा



मृदु भवतु उं यथावत् ॥ २३ ॥  
 मृदुभुमभु मृदुयकलभारुणाय ॥  
 यविमृभूपिलकदमिभुविधये ॥  
 ठैरुमृदु मृदुभुमृदुभुनयगठे  
 गठिठेगठिगठुयकृशिलमृदुभुमृदु  
 लभुमृभुमृदुभुमृदु ॥ २४ ॥ भवे  
 उभानकलमिरीलंमृदुठिगीडमि  
 कंभुगकिंच मृदुभुमृदुभुमृदुयल्ल  
 नमनकिंचमृदुविल्लभनभु ॥ ५० ॥ कल्ल  
 ममनन ॥ मवभंभुभुगभुंयभुभु  
 चल्लभल्ल पिडकनगलीयल्ल  
 ममनन ॥ ५० ॥ कल्ल ॥ यंवील्लठी

३  
 न.



उवमरुणः पिमरुष भङ्ग एतेन च ल <sup>मिप</sup>  
एतुमरुषिचमभा निमृतिमिपिदोरे  
मनुमरुः भनमः मुनी एयइति उरमिदम  
कगल ५३ विकगल ॥ मचभंमरुमि  
ममपुदममिचिदिउमृममममम  
भा उयकेउरलंल यंसयती विकगल  
कलिरुंभलंदराष्ट ५३ थोर थयुगन  
मिनी ॥ मपंविनमिनीमियं एनठकि  
भकलविग उतीवेधउमेवी थोर थयुग  
नमिनी ५४ रजुमउ ॥ उमएकएभा  
लेकभचगइयमंभुगउ रजुमउथिभा  
हुउमचयेवउमजिउ ५५ उवकेमी ॥

चण्डगण्डउरगुनपञ्चयमचण्डवेलीभक  
 तिमणति नकुण्डमिभूतयेभण्डरलेमि  
 षःकमिहुतिभूमाभुचकमी ५० वज्रकज  
 भुभकज ॥ भंउतगलभउतभकदगल  
 कुष ७ कलामभुठवइउउज्रकजभभा  
 कज ५१ कम्भुरी ॥ भाभुगीवउरनीरभं  
 भाभुगीवउरगगुधभा कम्भुरीभविध  
 येउभुंठमंभकीयंभुकलीकरीउ ५३ ॥  
 पल्लभा ॥ निगठमंभयकमाठभिउकुवन  
 इयभा भमनभकउवभापल्लभाभमल  
 इयभा ५७ कम्मीरी ॥ यभगण्डउनउ  
 भतिभाकृष्टपेवष्टुतिहुभममंभुतिनिणिभ

ति.  
 ना.



CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri



३३५ मित्रवर्ति: संवत् १८८१



भूतिपात्रिकाधुमा यद्वृत्तकमद्वगतासुभ  
 ह्येणयवृयेभमुदितायदिभ ७३ दंभग  
 तिः ॥ ७४ यंदं भगतिदेनभविताउदुमिश्रय  
 भा रुवेकुंभगतिःभभृक्तुमभिरुताधर ७५  
 दंभी ॥ दंभगदंभगदंभभृनमदंभरि  
 द्वाप दंभभृधयीदंभीदंभभवंमगउ  
 व ७६ दंभैल्लमिरेकद ॥ मदंभमिद्र  
 भदुधदंभभृक्तुलिता भनभेदउ  
 रुक्तनं दंभैल्लमिरेकद ७७ अल्लमद  
 भापी ॥ भीभउभिद्रकमउदिद्रुद्रकम  
 धल्लतुनिरुभृजः यषभृभिद्रविभ  
 मद्रु<sup>३</sup>अल्लभापीभिरुद्रकरीभरुउ ७८



शुभ॥ भित्तु कंग विडने डधवं शुभेवर  
 रिः किमयं उमीमी मध्वैव भण्डे दमलं वि  
 ण्डे शुभे दने शत्रु भन नृग द्वाडा १० भित्तु  
 शु॥ मचन्द्र मन्त्रेः परिधाय यमिरे विरे  
 ककल शुभे वी यधे न सं मे नृ सिधये  
 व भित्तु विण्डे मुदिता भित्तु शु १० शुभ  
 उरुल ॥ यन्मायं उरुल गस्त्रिधुं ठातिभ  
 लक पश्चकभा मध्वैव सुयकुष्ट शुभिवभा  
 शुभक उरुल १० मधीः ॥ यन्मन्त्रे वानी  
 मयं मेव मे वी मधी शुविन मे भित्तु भित्तु  
 धरी लायती मनिं डमेव भूत शुभु मधि  
 इमीय उलः धर दीनः १० लायिनी ॥

वि  
 नः



मुगभासु निराभाययभर मिडिउभनि  
 चरैःभयभुवः उरुयउरणतःभुवउ  
 येभउयेमभायउकुलेपिनी ११ लोप ॥  
 केनकेननुयेलकुइकुइमिउमने ले  
 इलोपयेमहुतनं ननसभनयडूके १३  
 भलोप ॥ महुवयंभठिभउचिभभं  
 भवेपिरुनेदभलोपठानि वरुभभत्र  
 उगवकुनेइभउभभभुककीभलोप १५  
 लोपकभिय ॥ उगगगलिभंलेकुमिडि  
 उपीवमिडिउः ठवतीकएनयभुभभत्र  
 लोपकभिय ३० मलिनी ॥ नभहुमहुध  
 उनःभकीययेनेदभभुइदउकधंन,



३

मंविष्णुलकावरापरयंभंभेहते<sup>३</sup>दिम  
 द्वितीमा ३३ मल्लकभु ॥ यथछरुतेन  
 उनेतिरेवमडनकं वभुमेवअनेः रुधुधु  
 रुधुधुउषाल्लरधुभामल्लकभुजगकभु  
 लभुभा ३३ एल्लभु ॥ एल्लमल्लननिअ  
 भानेलगल्ल रुभंभडुभडुः पंगडधितं म  
 उषधीजयल्लीवनंउल्ललभुभरुमत्रिणः  
 कैपिठवन्नठवः ३३ एल्लमेवड ॥ मधि  
 यङ्गणंएल्लउरात्तामपिनिलल्लमधिक्रपा  
 भयसु भडडनुभपीद्रिकवमंकुभल्लेउ  
 एल्लमेवडभुभरुः ३३ उरुयेइवनिः ॥  
 यइमिइरुएंडुधुमेवभरुयउंभापभा



केगव० ज० रु० मे० इ० वनि० भ० व० ० ० ०  
 याग ३५ कमी॥ ठिकां देवि उनीडिय  
 इवम०: श्रीविष्णुनामः सिद्धे भद्राय इभ  
 नहुवं नलठउ प्रचं वदं मि०: यभन  
 उकलैकभाजू विधयः भचभकामभु  
 उ० भकामी धरिकामउ भभद्रमकामे  
 भमनिस्त्रिउ उ० भषुग ॥ नरुथिय  
 भग्नितयेभमउः उ० थिकं हउवभु  
 थि०: मकगमिउं मलिउे थिभहुः भि०  
 रभमीमषुगभिकथि ३५ कल्ली ॥ उ  
 छत्रुछमद्रि उरुलतिकरभविधल्ली  
 धनः किछिदि छिमपद्मरुद्रायलन







नक्षत्रघनमनुभूत्वेनभुनिभुकर  
 योगनयनेदुभकेष्ट ॥

[illegible]

उत्तम भवेत्तत्पुण्ड्रमीयेतिबुद्धगमकुनि  
मृदुभक्तः नगभुक्तिपुत्रमिदंमृदुगिदिहक  
मृदुमिदंमिदि ५







चययैरुतै... परिसेधंमवकउं गुलिउं मिनाधिधुतुः पादुमम  
 ककुलनं चयनमडुधुतुः समककुः कलमंसकदिमवमं चं  
 सकदिममकनं धुतु ॥ सुवहंमभुमीधुतुलकुनक ॥ यंमधु ३९५  
 भनउंदि<sup>३९७</sup>कुवउं<sup>३९८</sup>ने<sup>३९९</sup>धु<sup>४००</sup>गु<sup>४०१</sup>मेनवमग<sup>४०२</sup>मिने<sup>४०३</sup>कुनः<sup>४०४</sup>मर<sup>४०५</sup>  
 हययः गु<sup>४०६</sup>धु<sup>४०७</sup>कनः<sup>४०८</sup>पप<sup>४०९</sup>धु<sup>४१०</sup>य<sup>४११</sup>क<sup>४१२</sup>गमः<sup>४१३</sup>रुभा<sup>४१४</sup>च<sup>४१५</sup>धु<sup>४१६</sup>पि<sup>४१७</sup>  
 मेनकः<sup>४१८</sup>दि<sup>४१९</sup>कुव<sup>४२०</sup>न<sup>४२१</sup>कु<sup>४२२</sup>उम ॥ सुवह<sup>४२३</sup>धु ॥ यं<sup>४२४</sup>कु<sup>४२५</sup>तु<sup>४२६</sup>तः<sup>४२७</sup>कु<sup>४२८</sup>व<sup>४२९</sup>  
 वे<sup>४३०</sup>कु<sup>४३१</sup>वः<sup>४३२</sup>यं<sup>४३३</sup>दि<sup>४३४</sup>धु<sup>४३५</sup>धु<sup>४३६</sup>च<sup>४३७</sup>व<sup>४३८</sup>व<sup>४३९</sup>व<sup>४४०</sup>व<sup>४४१</sup>व<sup>४४२</sup>व<sup>४४३</sup>व<sup>४४४</sup>व<sup>४४५</sup>व<sup>४४६</sup>व<sup>४४७</sup>व<sup>४४८</sup>व<sup>४४९</sup>व<sup>४५०</sup>  
 नः<sup>४५१</sup>मर<sup>४५२</sup>पि<sup>४५३</sup>ग<sup>४५४</sup>कि<sup>४५५</sup>उ<sup>४५६</sup>यै<sup>४५७</sup>दि<sup>४५८</sup>धु<sup>४५९</sup>गु<sup>४६०</sup>यं<sup>४६१</sup>मु<sup>४६२</sup>कन<sup>४६३</sup>लः<sup>४६४</sup>धु<sup>४६५</sup>रि<sup>४६६</sup>म<sup>४६७</sup>वि<sup>४६८</sup>मि<sup>४६९</sup>कुः ॥ ४०-४  
 सुव<sup>४७०</sup>गुरैः ॥ यं<sup>४७१</sup>कु<sup>४७२</sup>नि<sup>४७३</sup>न<sup>४७४</sup>ग<sup>४७५</sup>धु<sup>४७६</sup>धु<sup>४७७</sup>धु<sup>४७८</sup>धु<sup>४७९</sup>धु<sup>४८०</sup>धु<sup>४८१</sup>धु<sup>४८२</sup>धु<sup>४८३</sup>धु<sup>४८४</sup>धु<sup>४८५</sup>धु<sup>४८६</sup>धु<sup>४८७</sup>धु<sup>४८८</sup>धु<sup>४८९</sup>धु<sup>४९०</sup>  
 दि<sup>४९१</sup>म<sup>४९२</sup>न<sup>४९३</sup>व<sup>४९४</sup>क<sup>४९५</sup>यै<sup>४९६</sup>ध<sup>४९७</sup>धु<sup>४९८</sup>धु<sup>४९९</sup>धु<sup>५००</sup>धु<sup>५०१</sup>धु<sup>५०२</sup>धु<sup>५०३</sup>धु<sup>५०४</sup>धु<sup>५०५</sup>धु<sup>५०६</sup>धु<sup>५०७</sup>धु<sup>५०८</sup>धु<sup>५०९</sup>धु<sup>५१०</sup>  
 क<sup>५११</sup>धु<sup>५१२</sup>धु<sup>५१३</sup>धु<sup>५१४</sup>धु<sup>५१५</sup>धु<sup>५१६</sup>धु<sup>५१७</sup>धु<sup>५१८</sup>धु<sup>५१९</sup>धु<sup>५२०</sup>धु<sup>५२१</sup>धु<sup>५२२</sup>धु<sup>५२३</sup>धु<sup>५२४</sup>धु<sup>५२५</sup>धु<sup>५२६</sup>धु<sup>५२७</sup>धु<sup>५२८</sup>धु<sup>५२९</sup>धु<sup>५३०</sup>  
 य<sup>५३१</sup>उ<sup>५३२</sup>म<sup>५३३</sup>पि<sup>५३४</sup>न<sup>५३५</sup>रै<sup>५३६</sup>म<sup>५३७</sup>क<sup>५३८</sup>नः<sup>५३९</sup>दि<sup>५४०</sup>कु<sup>५४१</sup>रै<sup>५४२</sup>म<sup>५४३</sup>व<sup>५४४</sup>धुः<sup>५४५</sup>यं<sup>५४६</sup>धु<sup>५४७</sup>ल<sup>५४८</sup>पि<sup>५४९</sup>कु<sup>५५०</sup>कु<sup>५५१</sup>  
 र<sup>५५२</sup>म<sup>५५३</sup>तु<sup>५५४</sup>तु<sup>५५५</sup>धु<sup>५५६</sup>व<sup>५५७</sup>क<sup>५५८</sup>न<sup>५५९</sup>व<sup>५६०</sup>धु<sup>५६१</sup>धु<sup>५६२</sup>धु<sup>५६३</sup>धु<sup>५६४</sup>धु<sup>५६५</sup>धु<sup>५६६</sup>धु<sup>५६७</sup>धु<sup>५६८</sup>धु<sup>५६९</sup>धु<sup>५७०</sup>  
 मनेः ॥ यं<sup>५७१</sup>धु<sup>५७२</sup>धु<sup>५७३</sup>धु<sup>५७४</sup>धु<sup>५७५</sup>धु<sup>५७६</sup>धु<sup>५७७</sup>धु<sup>५७८</sup>धु<sup>५७९</sup>धु<sup>५८०</sup>धु<sup>५८१</sup>धु<sup>५८२</sup>धु<sup>५८३</sup>धु<sup>५८४</sup>धु<sup>५८५</sup>धु<sup>५८६</sup>धु<sup>५८७</sup>धु<sup>५८८</sup>धु<sup>५८९</sup>धु<sup>५९०</sup>  
 र<sup>५९१</sup>धुः<sup>५९२</sup>दि<sup>५९३</sup>र<sup>५९४</sup>ग<sup>५९५</sup>धु<sup>५९६</sup>धु<sup>५९७</sup>धु<sup>५९८</sup>धु<sup>५९९</sup>धु<sup>६००</sup>धु<sup>६०१</sup>धु<sup>६०२</sup>धु<sup>६०३</sup>धु<sup>६०४</sup>धु<sup>६०५</sup>धु<sup>६०६</sup>धु<sup>६०७</sup>धु<sup>६०८</sup>धु<sup>६०९</sup>धु<sup>६१०</sup>  
 यं<sup>६११</sup>धुः ॥ सु<sup>६१२</sup>धु<sup>६१३</sup>धु<sup>६१४</sup>धु<sup>६१५</sup>धु<sup>६१६</sup>धु<sup>६१७</sup>धु<sup>६१८</sup>धु<sup>६१९</sup>धु<sup>६२०</sup>धु<sup>६२१</sup>धु<sup>६२२</sup>धु<sup>६२३</sup>धु<sup>६२४</sup>धु<sup>६२५</sup>धु<sup>६२६</sup>धु<sup>६२७</sup>धु<sup>६२८</sup>धु<sup>६२९</sup>धु<sup>६३०</sup>  
 वि<sup>६३१</sup>र<sup>६३२</sup>न<sup>६३३</sup>म<sup>६३४</sup>धु<sup>६३५</sup>धु<sup>६३६</sup>धु<sup>६३७</sup>धु<sup>६३८</sup>धु<sup>६३९</sup>धु<sup>६४०</sup>धु<sup>६४१</sup>धु<sup>६४२</sup>धु<sup>६४३</sup>धु<sup>६४४</sup>धु<sup>६४५</sup>धु<sup>६४६</sup>धु<sup>६४७</sup>धु<sup>६४८</sup>धु<sup>६४९</sup>धु<sup>६५०</sup>  
 सु<sup>६५१</sup>धु<sup>६५२</sup>धु<sup>६५३</sup>धु<sup>६५४</sup>धु<sup>६५५</sup>धु<sup>६५६</sup>धु<sup>६५७</sup>धु<sup>६५८</sup>धु<sup>६५९</sup>धु<sup>६६०</sup>धु<sup>६६१</sup>धु<sup>६६२</sup>धु<sup>६६३</sup>धु<sup>६६४</sup>धु<sup>६६५</sup>धु<sup>६६६</sup>धु<sup>६६७</sup>धु<sup>६६८</sup>धु<sup>६६९</sup>धु<sup>६७०</sup>  
 ग<sup>६७१</sup>त<sup>६७२</sup>कु<sup>६७३</sup>धु<sup>६७४</sup>धु<sup>६७५</sup>



उत्तमिके कृतमभिदुतु समवे ॥ सुषट्त्नमानरुमभवे ।

मण्डिभट्ट शकुन्तलेपि सविलम्भमभ्युपैयं भवन्मरु

५७३ मुद्रां भवेद्यथागतेन कुरु ५८० ३५३३३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भक्तुं भक्तुं सुगुरु  
जितुं मित्रं भक्तुं

कनू कलमका  
मधु उदनीतिभन

रुमव गुरु भट्ट  
मिहणीतु टल्लक

महाराज कृष्णदेव  
वृत्तान्त

मृदुगु. नु.  
यदुमुनणिकेव

...



CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri



[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri



रुमठकुः रुममंसकुं, ००, ३७, ०३ मरिउं डलमि केरु डलुं सी ५६  
जगम ५, ०७, ३०, मनेनदीनैगुनः, २, ३, ५५, २०, मयंमरिमुत  
०, ००, ००, मीष्टः, एउंमरुकेरुं, ०, ३७, २, ०७ मयुडलंसाः ५७, २, ०७  
दिनेठकुः रुलं ३, गडकुः ३७, मयुडकुः, २३ मनेनगडकुं ७, मेधं ०९  
२०७ गडकुं ०३, ३३, ५०, दिनेठकुं रुलं, ७, ०२, ३५ मनेनगडकुं, ३७ पत्रः  
२०, ०२, ३५, रुमठकुः रुल, मंसमिभउं मेधमि केरु डलुं, २, ३७, ३७,  
मनेनयुकेगुनः, २, ३, ०५, ०७, एउंमरु मयुगुनः, २, ०३, ५३, २२, २५  
मसी ५६ ननयनेसी ५६ कुं, ३, ३५, ५३, ३५ एउंमरु विधरीउं मनुक ०९  
नमंभुउं एउं विडीयंसी ५६ कुं, ३, ३०, ३, ५३, ३६ मयुडिकमउं वि  
उः मीष्टिउं एउं, ३, ३, ३७, ३, मयुंसाः ७३, ३७, ३, दिनेठकुः रुलं ७  
गडकुः ०७ मयुडकुः ०३, मनेनगडकुं ३, मेधं ३, ३७, ३, गडकुं, ०७, ०३, २,  
दिनेठकुं रुलं, ०, ७, ०९, मनेनगडकुं ०७ पत्रः, ००, ७, ०३, रुमठकुः  
डलमि केरु डलुं सी ५६ रुममंसकुं, ००, २९, ५५, मनेनगडकुं मनुक ५  
मयुगुनः, २, ३, ७, २७ ॥ मयुमुडकु ॥ ३३ २ गनीउं मनुक ५ सी ५  
केरुं, ३, ५, २०, ३५, मयुंसाः, ७५, २०, ३५, दिनेठकुः रुलं ७ गडकुः  
३५२, मयुडकुः २०, ३, मनेनगडकुं २३, मेधं ५, २०, ३५ गडकुं ३७३,  
००, ० दिनेठकुं रुलं, ०३, ०३, २, मनेनगडकुं ३५२ पत्रः ३७३, ०३, २,  
रुमठकुः रुलमंसकुं, ३७, ३३, ०३ मरिउं मयुडिक केरु डलुं सी ५  
रुलं रुलं ०३, ३७, ३७, मयुभोरिः मयुभोरिः, ०, २, ०३, २३, रुलं  
मंसगुः ०, ३३, ५०, ३०, मयुभोरिः मयुभोरिः, ३, ००, ००, मीष्टिउं एउं मरुकेरुं  
०, ७, ७, ३७, दिनेठकुः रुलं ३ गडकुः ००, मयुडकुः ०३, मनेनगडकुं ३,







भक्त्युत्तरेति, मयि भक्तकेतुं कुरुं सकल उदये भक्त्युत्तरे नमः यत्तुं यत्तुं यत्तुं  
गतेषु भक्त्युत्तरे, उदये भक्तकेतुं कुरुं सकल उदये भक्त्युत्तरे नमः यत्तुं यत्तुं यत्तुं  
पण्डित उदये भक्तकेतुं कुरुं सकल उदये भक्त्युत्तरे नमः यत्तुं यत्तुं यत्तुं ॥

गडकुं २३ युक्तः १३, ३, ०. समस्तः मध्याह्निके सुप्तः शब्देन, ५.

७३. २३ सुनेयुर्भद्रमधुरः सविः ॥ १०, २३, ३॥ सुप्रभ गतिं पदं केन  
कलीरगपद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमोः मरैः ययुनेः विष्णुं हृदि रुतं सरं दूतं इन्द्रं पृथुं नमिडा मित्रं मिषकं गुरुं

॥ सुविः सविभक्तैः पुनलविः सधंभक्तैः

नैनयनेयहुंगउष्टुहुगुंउमुभेनगैः मरैः पयनैः कजुं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मन्त्रादुत्तुंगिगुं सरेठुं उतुयैन डि ठलं धुतुयुचुठुयेकुल कं॥

मम धनुर्गते दुर्मिणवकं, उति गते महु मरु मधु गतिः धृतिः ५

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वितीयमी ५६ लमबने यकडे पुमल कुतुंग पुम १०० ठिठ पुम १००

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

सुदुभुमडुडुं सनेदिपुं भडुडुडुं उडुडुः मीभुडुडुं भाडुडुं

उत्तममन्त्रभूषणः कृष्णस्य दीनयुक्ता, मन्त्रादभूषा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भङ्गभुण्डिके, ठिककह, गलक, मीपूके, रिभङ्ग मुनि उमा

श्रीन, ग्रीष्म ऋषि के पुत्र उडिनि सुयः, भाग्यशूरी उडिः भूत



मन्त्रकृतं उच्यते इति वाक्यं भूतं । तत्र कृतं कवति नीपूठकमालम  
 ठिकं मन्त्रमधुगतिपुनः इति वाक्यं कवति विपरीतं भूतं । भानु  
 वरुणमिहः । उच्यते । तैमभुमन्त्रकृतं १३ नैवेद्यं कृतं  
 ५३० । उच्यते कवति कवति मन्त्रकृतं १३० । ३० पुनः एतन्मन्त्र  
 भूगतिः ११, १३, तैमभुमन्त्रकृतं २०, पादुकां, कृतं ३० मय  
 कृतं कवति नैवेद्यं भूगतिः २५, ३॥ मय  
 एगतिमधीकरं ॥ मन्त्रकृतं ०९, विपुलं १२, पादुका  
 कृतं २, २३, कवति कवति मन्त्रकृतं ५३, ३, पुनः एतन्मन्त्र  
 भूगतिः १३, ५०, मन्त्रकृतं ३३, मय कृतं १, ३० म  
 य कृतं कवति नैवेद्यं भूगतिः १०, ३  
 ३३, ॥ मय मन्त्रकृतं मन्त्रकृतं ॥ मन्त्रकृतं ७ मय कृतं  
 ०, १३ उच्यते कवति कवति मन्त्रकृतं ५, कवति एतन्मन्त्र  
 भू, २, २३, मन्त्रकृतं ९, विपुलं, कृतं मय, २० मय  
 कृतं एतन्मन्त्रकृतं मन्त्रकृतं ॥ मय मन्त्रकृतं मन्त्रकृतं ॥  
 मन्त्रकृतं ९, विपुलं १२, मय कृतं ०, २३, मय कृतं  
 कवति मन्त्रकृतं ५३, ३, कवति एतन्मन्त्रकृतं ५३, ३, मय  
 कृतं २३ मय कृतं ०९, २०, मय कृतं मन्त्रकृतं एतन्मन्त्र  
 गतिः १, ३, ॥ मय मन्त्रकृतं मन्त्रकृतं ॥ मन्त्रकृतं २, ३  
 मय कृतं कृतं ०, ३, कवति कवति मन्त्रकृतं ३०, ३, पुनः ए  
 तन्मन्त्रकृतं ९, ३, मन्त्रकृतं ९, विपुलं ०९, पादुकां कृतं

५१९९

गु-न-  
०१







लगे:

मी. के	वर्ग	भान
०	००३	००१
१	०२५	३०५
२	०७५	३०५
३	००१	००३
४	००३	३२१

मी	५३	५५
के	३३	३३३
ली	०४	३२
म	०१	३४३

१. ५.

03